॥ व्याध-गीता ॥

संकलनकर्त्ता तथा हिन्दी भाष्यकार

सङ्गमलाल पाण्डेय

प्राध्यापक, दर्शन-विभाग

प्रयाग विश्वविद्यालय

東京外国語大学
177133
49. 3. 30
図書館蔵書

अभिव्यक्ति प्रकाशन

८४७, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-२

कॉपीराइट
संगमलाल पाण्डेय

प्रकाशक
अभिव्यक्ति प्रकाशन
८४७, यूनिवर्सिटी रोड
इलाहाबाद-२

मुद्रक
धारा प्रेस, ६०६, कटरा
इलाहाबाद-२

आवरण
शिवगोविन्द पाण्डेय

प्रथम संस्करण
फरवरी १९६९

पुस्तक-बन्ध
नवनीत बाइन्डर्स
इलाहाबाद

मूल्य : पाँच रुपये मात्र

अनुक्रम

●

आमुख ५
प्रस्तावना ११

खण्ड : एक

धर्मव्याध-कथा १६

खण्ड : दो

व्याध-गीता : संस्कृत मूल

प्रस्तावना कौशिक-एकपत्नी संवाद १
प्रथम अध्याय ७
द्वितीय अध्याय १८
तृतीय अध्याय २२
चतुर्थ अध्याय २९
पाँचवाँ अध्याय ३२
छठा अध्याय ३५
सातवाँ अध्याय ४१
आठवाँ अध्याय ४५
नवाँ अध्याय ४९

खण्ड : तीन

व्याध-गीता : हिन्दी भाष्य

प्रस्तावना कौशिक-एकपत्नीसंवाद ५४

व्याध-गीता अथवा धर्मव्याध कौशिक संवाद

पहला अध्याय : शिष्टाचार-लक्षण कथन ६१
दूसरा अध्याय : हिंसा-निर्णय ७६
तीसरा अध्याय : स्वधर्म-निर्णय ८२
चौथा अध्याय : इन्द्रियविज्ञान-वर्णन ९१
पाँचवाँ अध्याय : महाभूत-निर्णय ९५
छठा अध्याय : गुण-निर्णय १००
सातवाँ अध्याय : मातृपितृ शुश्रूषा-कथन १०९
आठवाँ अध्याय : व्याध-पूर्वजन्म-कथन ११४
नवाँ अध्याय : ब्राह्मण माहात्म्य-कथन ११९

चित्र—खंड दो, पृष्ठ १

प्रामुख

व्याधगीता श्रीमद्भगवद्गीता की भाँति महाभारत का एक अंश है। वहाँ इसका नाम धर्मव्याधकौशिक संवाद दिया गया है। इसमें धर्मव्याध नामक एक खटिक महात्मा ने कौशिक नामक एक ब्राह्मण को धर्म का उपदेश दिया है।

व्याधगीता में कुल ९ अध्याय हैं, जो महाभारत के आख्यक-पर्व के १९८-२०६ अध्याय हैं। इन अध्यायों के पूर्व, वहाँ अध्याय १९७ में कौशिक-एकपत्नी संवाद दिया हुआ है। यह संवाद व्याध-गीता की प्रस्तावना है। अतएव यहाँ व्याध-गीता के साथ इस प्रस्तावना को भी दे दिया गया है। इस प्रस्तावना तथा व्याध-गीता का जो पाठ यहाँ दिया गया है, वह भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना द्वारा प्रकाशित महाभारत से लिया गया है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में यहाँ एक पुष्पिका दी गयी है जो उस अध्याय के वर्ण्य विषय को बताती है। महाभारत में इन पुष्पिकाओं के स्थान पर दूसरी पुष्पिकाएँ हैं, जिनका वहाँ महत्त्व है और यहाँ महत्त्व नहीं है। मूल पाठ का हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। यह अनुवाद किसी अन्य अनुवाद को बिना देखे ही किया गया है। गीता प्रेस गोरखपुर